Naidunia (Indore), 19th August 2025, Page- 02

चिंता

आइआइटी इंदौर और राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के बीच करार, परियोजनाओं के कारण हो रहा असर

वन्यजीवों की सुरक्षा और मानव-वन संघर्ष के समाधान खोजे जाएंगे

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: वन्यजीव संरक्षण और सतत वन प्रबंधन की दिशा में राज्य वन अनुसंधान संस्थान (एसएफआरआइ) जबलपुर और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी-इंदौर) के बीच अनुबंध हुआ है। इसके माध्यम से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) और आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर मानव और वन्यजीवों के बीच होने वाले संघर्ष को कम करना है। खासकर उन क्षेत्रों पर केंद्रित होगा, जहां रेलवे लाइन के विस्तार और अन्य बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं के कारण वन्यजीवों का प्राकृतिक वास प्रभावित हो रहा है। तकनीक के जरिये ऐसे समाधान खोजे जाएंगे, जिससे वन्यजीवों की सुरक्षा और मानव-वन संघर्ष दोनों को नियंत्रित किया जा सके। दोनों संस्थान मिलकर अनुसंधान, तकनीकी समाधान और उनके वास्तविक कार्यान्वयन पर जोर देंगे। समझौते पर एसएफआरआइ के निदेशक प्रदीप वासुदेव और आइआइटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास एस जोशी ने हस्ताक्षर किए। इस दौरान वैज्ञानिक डा. अनिरुद्ध मजूमदार, अनुसंधान एवं विकास के डीन प्रो. अभिरूप दत्ता और खगोल विज्ञान विभाग के प्रमुख डा. सौरभ दास भी उपस्थित थे। निदेशक प्रो. जोशी ने कहा कि जैव विविधता की रक्षा और मानव-पशु संघर्ष कम करने के लिए संस्थान एसएफआरआइ की हर संभव मदद करेगा। वहीं वासुदेव ने कहा कि इस साझेदारी से मध्य प्रदेश में वन प्रबंधन मजबूत होगा और आधुनिक तकनीक की मदद से गंभीर चुनौतियों का समाधान निकाला जा सकेगा।

एमओयू के दौरान मौजूद दोनों संस्थानों के अधिकारी। ● सौजन्य

सीओओ कार्यक्रम की दूसरी बैच में प्रवेश शुरू

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : भारतीय प्रबंध संस्थान (आइआइएम इंदौर) ने चीफ आपरेटिंग आफिसर (सीओओ) कार्यक्रम की दूसरी बैच के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू कर दी है। 11 महीने अवधि वाले इस पाठ्यक्रम में आनलाइन माध्यम से पढ़ाया जाएगा। पाठ्यक्रम के माध्यम से संचालन उत्कृष्टता, पूर्वानुमान आधारित विश्लेषण, तकनीकी एकीकरण, नवाचार रणनीतियां, प्रबंधन दक्षता के बारे में बताया जाएगा। इसमें डिजिटल ट्रांसफार्मेशन, सिक्स सिग्मा और आधुनिक सप्लाई चेन पर मास्टरक्लास भी रखेंगे। कई मल्टीनेशनल कंपनियों से जुड़ी केस स्टडीज भी बताएंगे। प्रतिभागियों को

जस्ट-इन-टाइम (जेआइटी), फर्स्ट-इन-फर्स्ट-आउट (एफआइएफओ) और लास्ट-इन-फर्स्ट-आउट (एलआइएफओ) जैसी पद्धतियों पर हैंड्स-आन वर्कशाप भी कराई जाएगी।

अधिकारियों के मुताबिक वैश्विक स्तर पर ऐसे सीओओ की मांग तेजी से बढ़ रही है जो डेटा एनालिटिक्स और टेक्नोलाजी को मिलाकर काम कर सकें। अंतरराष्ट्रीय आंकड़े के मुताबिक एफटीएसई 100 कंपनियों में सीओओ का औसत कार्यकाल केवल दो वर्ष सात महीने है, जो यह दर्शाता है कि कंपनियां अब आंतरिक प्रतिभाओं को तैयार कर उन्हें नेतृत्व भूमिकाओं में आगे बढ़ा रही हैं। संस्थान के निदेशक प्रो. हिमांशु राय ने कहा कि आज का सीओओ तकनीक, प्रतिभा और उद्देश्य को एकजुट कर अस्थिरता को अवसर में बदलने वाला होना चाहिए। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों को मशीन लर्निंग का इस्तेमाल कर भविष्य की स्थितियों का अनुमान लगाने, सप्लाई चेन को फिर से डिजाइन करने और टिकाऊ विकास की ओर ले जाने की क्षमता देता है।